आज की मुरली का सार --

बाबा ने कहा, मीठे बच्चे हद की सर्व बातों से बुद्धि को निकाल अब बुद्धि को बेहद में टिकाना हैं. कैसे?

ज्यादातर मनुष्यों की बुद्धि चार बातों में रहती हे - शरीर, साधन, सम्पति, ओर सम्बन्ध. ये चारों बातें मनुष्य की बुद्धि को हद में कर देती हे. बाबा हमें ये चारों बातों से बुद्धि को निकाल, बेहद में बुद्धि को टिकाना सिखाते हे. **बेहद में बुद्धि को टिकाने के लिए, दो बातें हमें करनी हे, ड्रामा का पाठ पक्का करना हे ओर स्वदर्शन चक्रधारी बनना हैं.**

1. ड्रामा का पाठ पक्का करने के लिए बाबा ने हमें ड्रामा के बारे में जो भी बातें बताई हे इसको रिपिट करेंगे. ड्रामा के बारे में बाबा ने बताया हे ---

ड्रामा एक्युरेंट हैं. --> ये पाइन्ट हमें बेफिक्र बनाता हैं.

ड्रामा हर 5000 वर्ष रिपिट होता हैं. ---> ये पाइन्ट हमें सिखाता हे, अभी जो कर्म करेंगे, वही कर्म ड्रामा के अगले साइकिल में भी करेंगे, तो अब हमें अपना हर कर्म श्रेष्ठ करना ही हैं.

इस बेहद के ड्रामा में सब आत्माये नम्बरवार पार्ट बजाने आते हैं. ड्रामा में पार्टधारी आत्माओं के नम्बर में फर्क नहीं हो सकता. --> ये पाइन्ट हमें क्यू-क्या के questions से उपराम कर देता हैं.

ड्रामा टिक-टिक जुई मिसल चलता हैं. --> ये पाइन्ट हमें धैर्यता सिखाता हैं.

ड्रामा हर सेकंड चेईंन्ज होता हैं. --> ये पाइन्ट हमें साक्षी हो कर ड्रामा को देखना सिखाता हैं.

अचानक के समय पर ये पाइन्ट हमें अचल-अडोल रहना सिखाता हैं.

ड्रामा अंतिम चरण में हे - ये पुरानी दुनिया विनाश होनी हे, अब हम अपने बाबा के पास जाते हे फिर सतयुग में आयेंगे. --> ये पाइन्ट हमारी बुद्धि को उपराम बना देता हे, पुरानी दुनिया से नाता तोड़ नयी दुनिया से जोड देता हे.

2. स्वदर्शन चक्रधारी बनना हैं.

मन को मजबूत बनाने के लिए, स्वदर्शन चक्रधारी बनो. बाबा हमें ये ड्रिल इसलिए सिखाते हे, जिसे हमें स्वचिंतन करने की प्रैक्टिस हो तो हमारी स्थिति अन्तरमुखि बन जायेगी. अन्तरमुखि स्थिति बहुत मजबूत स्थिति हे, जिसे हम माया के कोई भी वार से सहज ही बच सकते हैं. स्वदर्शन चक्रधारी कि ड्रिल हमें हमारा लक्ष्य, लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना याद दिलाता हे जिसे हम आत्माये दैवी-गुण धारण करने का पुरुषार्थ करते हे.

ॐ शांति.